International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(5): 152-155

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(5): 152-155
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-07-2018
Accepted: 17-08-2018

डॉ० वन्दना रुहेला
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जे० वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ० वन्दना रुहेला
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जे० वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

मेघदूतम्: गीतिकाव्य के रूप में एक पुनरावलोकन

डॉ० वन्दना रुहेला

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2018.v4.i5c.1846

पूर्वपीठिका

महाकवि कालिदास की विश्वप्रसिद्ध कृति 'मेघदूतम्' प्रेमानुभूति की अगाध सरिता है, जिसमें एक प्रेम ही मैत्री, विलास, लोकहित, भक्ति जैसी विविध भाववीचियों के रूप में तरंगायित हो रहा है। इसकी भावधारा में अवगाहन करते हुए इसी विषय को इस शोधपत्र में उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। यक्ष के रूप में हृदयगत भावाब्धि में आकंठ निमग्न महाकवि कालिदास कविता को बस जीते हैं और काव्योत्कर्ष सहजता से उसमें उतरता चला जाता है। क्या अलंकार, क्या रीति, क्या ध्वनि, क्या रस, क्या वक्रोक्ति और क्या औचित्य सबका निकष उनका कविहृदय है जो सहज ही कविता को समृद्ध करता जाता है। इसी भावाब्धि में कल्लोल करता सहृदय मानस इन काव्य- तत्व के अमृत कणों से आप्लावित होकर आनन्दमग्न हो जाता है।

एक गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत अप्रतिम है। महाकवि कालिदास की कवित्व कला का स्वर्णिम उन्मेष है। एक विरही यक्ष अपनी प्रियतमा को संदेश भेज रहा है, कलावस्तु यही है जिसे महाकवि ने अपनी कल्पनाशीलता और कला कौशल से एक सहृदहृदयाह्लादकारी बन्ध [1] के रूप में ग्रथित किया है। प्रेमाकुल हृदय जो मेघ को देखकर कदाचित् मिलन के क्षणों की स्मृति और वर्तमान विछोह से बावरा सा हो गया है- कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठ: [2] उसकी अवस्था को कह रहा है। यहाँ बड़ी कुशलता से महाकवि जगत्प्रसिद्ध सत्य से काव्यगत औचित्य का निर्वाह करते हैं - मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेत:[3] और बहुत सुंदरता से यक्ष का मेघ को दूत बनाकर सब कुछ कहना सुनना औचित्यपूर्ण हो जाता है। आचार्य कुन्तक इसे प्रबन्धवक्रता[4] कहते हैं और क्षेमेन्द्र प्रबन्धौचित्य, गीतिकाव्य की परिभाषाओं के सन्दर्भ में यह कल्पना की उड़ान है। गीति-काव्य आत्मानुभुति का, मानव-जीवन की मार्मिक घटनाओं का संगीतात्मक शब्द-चित्र है, कविहृदय की मार्मिक अनुभूतियों का सच्चा उद्गार है।[5] अस्तु, एक गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत में महाकवि की उत्कृष्ट कल्पना, भावों की सहृदयाह्लादकता, रससिद्धता, ध्वन्यात्मकता, वर्णन-कौशल, चित्रात्मकता, गेयता और अधिक क्या समस्त काव्य कौशल का मनोहारी निदर्शन है। यह स्फुरित विद्वदाह्लालादकारित्व मेघदूतम् में साक्षात् अनुभवगोचर होता है –

वाच्यवाचकवक्रोक्तित्रितयातिशयोत्तरम्।
तद्विद्वदाह्लादकारित्वं किमप्यामोदसुन्दरम्॥ [6]

मन्दाक्रान्ता छन्द ने विषयानुकूल वातावरण रच दिया है और चित्रात्मकता तो ऐसी है कि सहृदय मानो पार्श्वसंगीत के साथ एक अलौकिक चित्रवीथी की यात्रा कर रहा हो।

'मेघदूतम्' के प्रथम-पद्य से बहती विप्रलम्भ-शृङ्गार की धारा से विविध भाव रंगते चले गए हैं कहीं मार्ग के सौन्दर्य के रूप में, कहीं मैत्री, कहीं मिलन विरह की उत्कंठा, कहीं सौजन्य, कहीं उद्दाम-शृङ्गार, कहीं भक्ति, कहीं स्मृति पथ में अलकापुरी के उत्कर्ष के चित्र -आद्योपान्त यक्ष के मनोभावों को कहते कालिदास उसके प्रेमीमन के उद्गारों को गाते जा रहे हैं। सर्वत्र प्रेम-प्रतीक्षा और मिलन की कामना के सुकोमल -सूत्र में सभी वर्णन जैसे अनुस्यूत हैं।

विरही मन के लिए सारी प्रकृति जैसे उसी के भाव में ढ़ली है। वियोग के कुछ माह ही शेष रह गए हैं और प्रतीक्षा के यही पल प्रेमी हृदय के लिए कठिन हैं इसलिए वह प्रियतमा के जीवन की आशंका से भी आकुल है। मेघ तो संतप्तों की शरण है - सन्तप्तानां त्वमसि शरणम् [7] इसलिए यक्ष कहता है- सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य। [8]

मेघालोके··· कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे [9] शब्दों से ध्वनित होते सुख के पल और विरह की कथा सब कही अनकही कह दिया गया। यही मेघ व्याकुल हृदय के लिए आश्रय हो गया है। प्रेम की पराकाष्ठा में आकुलित मन मेघ को ही दूत बना लेता है। यद्यपि सत्य भी उसे ज्ञात है किन्तु मेघ से अपने मन की कहने में उसे संतोष है- याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। [10] कविवर पंत की ये पंक्तियां जैसे मेघदूत के लिए ही कही गयी हों -

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान
उमड़ कर आंखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान [11]

वियोगी यक्ष के नेत्रों से भी अश्रुधारा बह रही है-
त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागै: शिलायाम् …[12] और यह गीति जब सहृदय मन से संवाद करती है तो कविमन की भावसरिता का जैसे सहृदयमन की भावधारा से संगम हो जाता है। यही रसाभिव्यक्ति यही कवि और सहृदय का मन: संवाद गीति की सार्थकता है। भावप्रवणता का यह सहज संप्रेषण गीति का प्राणतत्व है। कवि अनुभूतियों को शब्दों में उकेरने में जितना निपुण होता है, गीति का रसोद्रेक उतना ही विस्तार पाता है। यद्यपि संस्कृत काव्यशास्त्र में पृथकतया गीति के विषय में कुछ नहीं कहा किंतु यह तथ्य भी धारणीय है कि यहाँ काव्य की परिभाषा बहुत व्यापक है। भरतमुनि से लेकर समस्त काव्यशास्त्र परम्परा इसका निदर्शन है। नाट्यशास्त्र में गीत का प्राचीनतम प्रयोग प्रगीत के रूप में है। नाट्य में 'गीत'[13] 'गीति' का ही लघु रूप है जो भावधारा का कमनीय प्रस्तुतीकरण होता है।
मम्मटाचार्य जब 'सद्य:परनिर्वृत्ति'[14] कहते हैं तो गीति का लक्षण स्वत: हो जाता है तथा यह भी स्मरणीय है कि यह प्रयोजन सकलप्रयोजन-मौलिभूत है। कवि का आदर्श ही 'सद्य:परनिर्वृत्ति'[15] है क्योंकि यदि काव्य सहृदय-कंठहार न हो सका तो काव्य की सार्थकता ही क्या? कवि के समस्त कौशल की कसौटी ही सहृदयाह्लादकता है। इसीलिए 'मेघदूतम्' आज भी सहृदय-मन का आकर्षण-मंत्र है। एक महाकाव्य में भी 'सहृदयमन:-प्रीति'[16] और 'सहृदयपरनिर्वृत्तये'[17] की भावना निस्संदेह है किंतु उसमें विस्तार है जीवन के अनेक क्षेत्रों को कवि प्रस्तुत कर रहा है। अतः विषयानुकूल कहीं वर्णन विस्तार, विवरणात्मकता, घटना संयोजन का विस्तार भी होता है किंतु गीति में भाव ही प्रधान है।
कवि मन की एक विशिष्ट अवस्था जो सीमित आकार में सघनता से भावराशि को संप्रेषित करती है। ऋग्वेदीय 'उषस्-सूक्त' में ऊषाकालीन सौन्दर्य से भावविभोर वैदिक ऋषि कविता की धारा में बहा चला जाता है।[18] उपनिषदों में तत्त्वसाक्षात्कार के आनन्द से उद्भूत तत्त्वचिंतन में भी गीति है। महर्षि वाल्मीकि के रामायण में सुंदरे किं न सुंदरम् इसलिए है क्योंकि वह गीति का ही एक रूप है -

हिमहतनलिनिव नष्टशोभा, व्यसनपरम्परया नीपीड्यमाना।
सहचररहितेव चक्रवाकी, जनकसुता कृपणां दशां प्रपन्ना॥ [19]

श्री रामचरितमानस में भी यही गीति है-

सुनहु बिनय मम बिटप असोका सत्य नाम करु हरु मम सोका।
नूतन किसलय अनल समाना देहि अगनि जनि करहु निदाना ॥ [20]

श्री रामचन्द्र के वियोग में व्याकुल सीताजी को अपने जीवनाधार का संदेश मिल रहा है। सत्व का उद्रेक विगलितवेद्यान्तर अनुभूति का साक्षात्कार कराने लगता है ओर दूसरी ओर भक्ति की उत्कृष्टता -भक्त हृदय हनुमान जो अनेक बाधाओं को पार करके अपने आराध्य प्रभु की प्राणप्रिया जगन्माता सीता तक संदेश ले आए हैं।
ध्वन्यात्मकता से सहृदय मन तक पहुंचती यह अनुभूति अश्रु के रूप में आकार पाती है। रस की अलौकिकता है कि 'सद्यपरनिर्वृत्ति' अश्रुओं में भी आनन्द देती है। कवि का आदर्श ही 'सद्य:परनिर्वृत्ति' है क्योंकि यदि काव्य सहृदय-कंठहार न हो सका तो काव्य की सार्थकता ही क्या?
कवि के समस्त कौशल की कसौटी ही 'सहृदयाह्लादकता' है। इसीलिए 'मेघदूतम्' आज भी सहृदयमन का आकर्षण-मंत्र है। गीति का प्रमुख तत्व अजस्र-भावधारा है, जो 'कवित्व-स्पंद' तथा 'शिल्प-सौन्दर्य' की उत्कृष्टता और ध्वन्यात्मकता से एक गीति के रूप साकार होती है। आचार्य कुन्तक के मौलिक चिंतन 'वक्रोक्तिजीवितम्' का काव्यलक्षण[21] और वक्रोक्ति यहाँ पदे-पदे उद्घाटित होती है। मेघदूतम् में कवि किसी भी विषय में उस भाव को भूल नहीं रहे हैं, जिसमें वर्तमान हैं। यही गीति का वैशिष्ट्य है।
महाकवि की भावधारा से हर विषय आप्लावित अभिसिंचित हुआ रहता है, जैसे घनघोर बरसते मेघ, वृक्ष, लता, जीव-जगत, धरती सब कुछ भिगो देते हैं अथवा यह कहें कि एक ही भाव में बहते कवि के मार्ग में जो भी विषय आता है वह तद्रूप ही हो जाता है।
पूर्वमेघ में प्रकृति और अन्यान्य वर्णनों में प्रेम के विभिन्न रूप मैत्री, विलास, मिलन के चित्र और कहीं विशुद्ध भक्ति भावना के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। मैत्री में एक यदि हृदय की पीड़ा कहे तो दूसरा उसे दूर करने को स्वभावत: प्रवृत होता है - क: सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां, न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः [22] में अपनी विवशता और तां चावश्यं दिवसगणानात्परामेकपत्नी-मव्यापन्नामविहतगतिद्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम् [23] में तुम अपनी विथहविधुरा भातृजाया को एक एक दिन गिनते पाओगे - ऐसा सुनकर भला मित्र मेघ कैसे संदेश देने न चल पड़ेगा? यक्ष मित्र मेघ के लिए कल्याणकारी मार्ग की कामना करता है।[24] समय-समय पर मित्र से मिलना मैत्री को प्रगाढ़ करता है। रामगिरि पर्वत से उठती वाष्प मित्र मेघ के प्रति उसके स्नेह का प्रकटन है। [25]
मेघ की मित्र के रूप में कल्पना भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे! विद्धि मामम्बुवाहं तत्संदेशैर्हृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम् [26] से मैत्री, स्नेह और मनोविनोद [27] के अनेक चित्र सरसता का आधान करते हैं। मित्र मेघ प्रियतमा तक मेरा संदेश ले जा रहा है, इस कल्पनामात्र से विरही हृदय इस उमंग से मार्ग का वर्णन कर रहा है, जैसे वह स्वयं अपने गृह की ओर यात्रा कर रहा हो, जिसकी परिणति प्रिया-मिलन के रूप में होगी। रसिक-मित्र से इसी चर्चा में वेगवती[28], निर्विन्ध्या[29] और गम्भीरा[30] नदी के नायिका रूप में चित्रण से संयोग और विलास के दृश्य मेघदूत को विप्रलम्भ की एकरसता में डूबने नहीं देते।[31] यक्ष मित्र को यद्यपि अपने कार्य के लिए शीघ्रता का इच्छुक है तथापि उसका हृदयगत प्रेम 'कल्याणकामना, सौन्दर्यबोध'[32] और 'स्नेह' से सिक्त है। मेघ जहाँ थके उसे विश्राम करना चाहिए [33], मेघ गन्तव्य मार्ग से हटकर भी माल-क्षेत्र पर वर्षा करके जाए।[34] दावाग्नि को शान्त करने के कारण आम्रकूट-पर्वत तुझको सिर पर धारण करेगा।[35] ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्हं भवानी, पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति [36] - में प्रेम वात्सल्य में ढल गया है।
जैसे ही मार्ग में महाकालेश्वर महादेव का मंदिर आता है, विरही मन के समस्त भाव भक्ति में तन्मय हो जाते हैं । हे मेघ ! सन्ध्या समय तक वहीं ठहरना चाहिए और नीराजना में तुम नगाड़े सा निनाद करके गर्जनाओं के सम्पूर्ण फल को प्राप्त कर लोगे- अप्यन्स्मिञ्जलधर महाकालमासाद्य काले, स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानु: [37] और जब तुम सांध्यकालीन तेज को धारण करके शिवजी के लिए आर्द्रगजचर्म हो जाओगे तो जगज्जननी पार्वती द्वारा शान्तोद्वेगस्तिमित नयनों से दृष्टभक्ति तुम देखे जाओगे।[38] किन्नरियों के त्रिपुरविजय गीतों में तुम मुरज हो जाना।[39] भक्ति में हिमालय- राशीभूत: प्रतिदिनमिव त्रयम्बकस्याट्हास: प्रतीत हो रहा है।[40] मेघ को कुमार कार्तिकेय का पूजन करने को कहने में यक्ष की भक्ति छलक रही है।[41]
उत्तरमेघ में अलकापुरी के वैभव और सुख का वर्णन हैं [42] जैसे स्वयं यक्ष अपनी नगरी में पहुंच गया है - आनन्दोत्थं नयनसलिलं यत्र नान्यैर्निमित्तै: से जैसे कालिदास ने यक्ष के वियोगजन्य पीड़ा की सघनता को व्यक्त कर दिया है।[43] अपने घर को जैसे वह साक्षात् देख रहा है – तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्[44] लेकिन मेरे वियोग में यह क्षामच्छायम् होगा क्योंकि - "सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्"[45]
यक्ष की प्रेमाकुलता को अभिव्यक्त करते हुए महाकवि कालिदास काव्यशिल्प की चित्रात्मक सृष्टि करते चले जा रहे हैं। यक्ष के नयनों में प्रियतमा की छवि -

तन्वी श्यामा शिखरिदशना क्वबिम्बाधरौष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां,
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः॥ [46]

वह उसका द्वितीय प्राण है – तां जानीथा: परिमितकथा जीवितं में द्वितीयम्, किंतु इस समय अकेली चक्रवाकी सी विरहोत्कण्ठिता वह बाला, शिशिरमथिता पद्मिनी सी कुछ अन्यरूप हो गई होगी।[47]
महाकवि कालिदास ने यक्ष के अन्तस्तल की पीड़ा को शब्दों में उतार दिया है। लम्बी अलकों से दीखता चेहरा जैसे बादलों में धुंधला चांद सा लग रहा होगा।[48] कभी वह मेरी कुशलता के लिए देवाराधन में लगी होगी कभी अपनी कल्पना में

लाकर मेरा भावचित्र बनाती होगी - आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती। [49]

विप्रलम्भ के ये चित्र हृदयतन्त्री को झंकृत कर देते हैं और कविता जैसे हृत्स्पन्दनों पर गति करती है- तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथञ्चिद् भूयोभूयः स्वयमपि कृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ती - मलिन अंक में रखी वीणा पर मेरे नाम का पद गाते गाते विह्वल होकर उमड़े आंसुओं से वीणातन्त्री भीग जाती होगी।[50] विरह-वेदना से व्यथित वह मनोव्यथा से क्षीण हो गई होगी।[51] देहली पर पुष्प रख- रखकर दिन गिनती होगी कि जिस द्वार से गया हूं, उससे सकुशल वापस मिलूं – शेषान्मासान्विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा। [52]

यक्ष-संदेश में विप्रलम्भ सहृदयमन से साक्षात्कार करता है और अश्रुओं में अभिव्यक्त होता है। मेघ यक्षिणी को उसका संदेश ऐसे सुनाए -

भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धिमाम्बुवाहं
तत्संदेशैर्यहृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम्।
यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानां
मन्द्रस्निग्धैर्ध्वनिभिरबलावेणिमोक्षोत्सुकानि॥ [53]

इसके एक एक पद पर काव्यशास्त्रकारों की विस्तृत टीकाएं प्राप्त होती है। संदेश सुनकर वह निश्चय ही प्रसन्न हो जाएगी क्योंकि- कान्तोदन्तं सुहृदुपनतं संगमात् किञ्चिदूनः [54] उससे कहना कि - तेरा चित्र बनाता हूं तो बार बार उमड़ कर आते अश्रु मुझे स्वयं को तेरे साथ चित्रित करने नहीं देते।[55] स्वप्नों में तेरे आलिंगन के लिए शून्य में फैली मेरी भुजाओं वाले मुझे देखकर वनदेवता अश्रु बहाती हैं।[56]

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतम् [57] कहकर वह बीते हुए विरह के कुछ मास बिता देने के लिए समझाता है। वियोग में तो स्नेह घनीभूत होकर प्रेमराशि हो जाता है। स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगादिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति। [58] उसे विश्वास है कि मेघ उसका संदेश अवश्य पहुचाएगा। यक्ष कहता है - निःशब्दोपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः। [59] संदेश देने के बाद जो कुछ कालिदास ने यक्ष से कहलाया है वह प्रेम के उत्कर्ष का निदर्शन है-

एतत्कृत्वा प्रियमनुचितप्रार्थनावर्तिनो मे,
सौहार्दाद्वा विधुर इति वा मय्यनुक्रोशबुद्ध्या।
इष्टान्देशाञ्जलद विचर प्रावृषा संभृतश्री,
र्मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः॥[60]

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि कालिदास के 'मेघदूतम्' में यक्षमुखेन विप्रलम्भ-शृंगार की धारा में विविध भाव-वीचियों के रूप में बह रहे हैं। वही प्रेम इन विविध भावों में विराजित है। यक्ष प्रेम में कर्त्तव्य से प्रमाद कर बैठा है। कालिदास प्रेम के कवि हैं किन्तु प्रेम में कर्त्तव्य से किया प्रमाद स्वीकार नहीं। कर्त्तव्य में त्रुटि है, तो दण्ड स्वाभाविक है हाँ! प्रेमसिक्त हृदय की पीड़ा, विवशता, विकलता जो स्वयं महाकवि की कल्पना से विस्तार पा रही है, स्वयं सहृदय कविमन को स्पंदित कर गयी है। यक्ष पर क्या बीत रही है, महाकवि इसे जैसे स्वयं जी रहे हैं और हर श्वास-प्रश्वास से उमड़ती विरह-वेदना जैसे शब्दों में ढल रही है। प्रेम ही विविध भावों में उतरकर गीति बन रहा है, विस्तार पा रहा है और सहृदयमन शताब्दियों से इस गीति के रस-प्रवाह में आनन्दमग्न हो रहा है।

संदर्भ सूची

1. वाच्यवाचकसौभाग्यलावण्यपरिपोषकः। व्यापारशाली वाक्यस्य विन्यासो बन्ध उच्यते॥ वक्रोक्तिजीवतम् – 1/22
2. मेघदूतम्, पूर्वमेघ - 2
3. तत्रैव - 3
4. वक्रोक्तिजीवतम् – 01/21 तथा भारतीय काव्यशास्त्र, वक्रोक्ति सम्प्रदाय : स्वरूप एवं स्थिति, पृष्ठ - 158
5. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय, पृष्ठ सं० - 261
6. वक्रोक्तिजीवितम् - 01/23
7. मेघदूतम्, पूर्वमेघ - 7
8. तत्रैव
9. मेघदूतम्, पूर्वमेघ - 3
10. मेघदूतम्, पूर्वमेघ - 6
11. पल्लवम् कविता संग्रह रचनाकार समित्रानन्दन पन्त
12. त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया। मात्यानं ते चरणपतिता यावदिच्दामि कर्तुम्॥
अस्रन्तावन्मुमुरूपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे। क्रुररस्तास्मिन्नपि न सहते संगम नौ कृतान्तः॥ मेघदूतम् - 102
13. शब्दकल्पद्रुमः – गै-गाने+क्तिन्=गानम्। यथा कुमारे।३।४०-
"श्रुताप्सरोगीतिरपिक्षणेऽस्मिन्हरःप्रसंख्यानपरोबभूव॥
आर्य्याच्छन्दोविशेषः।इतिमेदिनी।ते१६॥
अस्यालक्षणंयथाछन्दोमञ्जर्य्यांमात्रावृत्ते।७।
आर्य्याप्रथमार्द्धसमंयस्याःपरार्द्धमीरितागीतिः॥"
14. सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥ काव्यप्रकाश – 01/02
15. तत्रैव
16. तेन ब्रुमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्॥ ध्वन्यालोक - 01/01
17. काव्यप्रकाश – 01/02
18. द्रष्टव्य – ऋग्वेदीय उषस्-सूक्त
19. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणम्, द्वितीय खण्ड – 16/30
20. गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस, 667-668, गीताप्रैस गोरखपुर
21. शब्दार्थौसहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥ आचार्य कुन्तक
22. तत्रैव - 08
23. तत्रैव - 09
24. तत्रैव - 10
25. तत्रैव - 12
26. तत्रैव - 39
27. प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः। तत्रैव - 16
28. तत्रैव - 25
29. तत्रैव - 29
30. तत्रैव - 43
31. तत्रैव – 35, 38, 40
32. तत्रैव - 27
33. तत्रैव – 13, 41
34. तत्रैव - 16
35. तत्रैव – 17 तथा 56
36. तत्रैव - 47
37. तत्रैव - 37
38. तत्रैव - 39
39. तत्रैव - 59
40. तत्रैव - 61
41. तत्रैव – 46, द्रष्टव्य – भक्तिविषयक प्रसंग पूर्वमेघ श्लोक संख्या – 15 तथा 60
42. तत्रैव - 1, 3, 5, 6, 12
43. मेघदूतम्, उत्तरमेघ - 4
44. तत्रैव - 15,16,17,19
45. तत्रैव - 20
46. तत्रैव - 22
47. तत्रैव - 23
48. तत्रैव - 24
49. तत्रैव - 25
50. तत्रैव - 26
51. तत्रैव - 29
52. तत्रैव - 27

53. तत्रैव - 39
54. तत्रैव - 40
55. तत्रैव - 45
56. तत्रैव - 46
57. तत्रैव - 49
58. तत्रैव - 52
59. तत्रैव - 54
60. तत्रैव - 55